''रामचरित मानस में हनुमान तथा शबरी की भक्ति भावना''

डॉ० गीतांजली कुमारी

भक्ति भक्त को भगवान के साथ निरन्तर जोड़े रहती है। यह भक्त के मन को एकाग्र करके श्रेष्ठसहित ईश्वर की उपासना करने के लिए प्रेरित करती है। जहाँ तक भक्ति के अर्थ का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि मन को सच्चाई से भगवान को सौंपना और निरन्तर उसकी उपासना करना ही भक्ति है। भक्ति का स्वरूप भक्त को ''सर्वभूत हिते रता'' बनाना है। ''मय्यावेशित चेत साम''से ज्ञात होता है कि भगवान में चित्त का लगाना ही भक्ति हैं और इसका फल यह होता है कि परमात्मा भक्त को मृत्युरूप संसार सागर से अच्छी तरह से उद्धार कर देता है– ''तषामहं समृद्धर्ता मृत्युसंसार सागरातं''। भगवान के लिए कर्म करना या उनके निमित्त कर्म करना ''मत्कर्म परमो भव'' मदर्थमपि कर्माणी'' भक्ति है।

रामायण एक महाकाव्य है। इसमें अनेक पात्रों का विवरण मिलता है। सभी पात्र भक्ति भावना से भरपूर्ण है। महाकाव्य रामायण में हनुमान भी एक महत्त्वपूर्ण पात्र है।